ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 357-358

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

भारतीय ग्रामीण समुदाय एवं संचार माध्यम

अजीत कुमार
एम0ए0, पी–एच0डी0 (समाजशास्त्र), मगध विश्वविद्यालय, बोध गया (बिहार), भारत

Received- 05.08.2020, Revised- 09.08.2020, Accepted - 13.08.2020 E-mail: - dr.ramnyadav@gmail.com

सारांश : *भारत गाँव प्रधान देश है। भारत की उन्नति गाँव पर ही निर्भर करती है। देश का लगभग 75 प्रतिशत जनसंख्या गाँव में निवास करती है। वर्तमान समय में ग्रामीण भारत का वह स्वरूप नहीं है जो पहले था। आज ग्रामीण भारत संचार माध्यमों से लैश है। इसका कारण यह है कि ग्रामीणों में दिन–प्रतिदिन शिक्षा का प्रसार बढ़ता जा रहा है। जिसके फलस्वरूप उनमें जागरूकता उत्पन्न हुई है। ग्रामीणों की जागरूकता उत्पन्न करने में संचार माध्यमों को अहम् स्थान रहा है।*

कुंजीभूत शब्द– प्रधान देश, उन्नति, स्वरूप, दिन–प्रतिदिन, शिक्षा का प्रसार, जागरूकता, सामाजिक प्राणी, सम्प्रेषण।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के कारण उसके आस–पास की घटनाओं को जानने की उत्सुकता होती है तथा अपने अनुभवों को बाँटने की इच्छा विद्यमान होती है। ऐसे सभी कार्य सम्प्रेषण के माध्यम से ही सम्भव होती है। संचार माध्यम समुदाय की धुरी एवं सामाजिक सम्बन्धों के निर्माण एवं विकास के मूल हैं। सम्प्रेषण की प्रक्रिया विभिन्न रूपों में संचरित होती है। जब यत्र–तत्र बिखरे अपार जन–समूह व्यापक एवं क्रमबद्ध वैज्ञानिक तरीकों से किसी सूचना को सूचित संदेशित प्रबोधित एकत्रित आदि करके आम जनता को पहुँचाने की संस्थात्मक स्वरूप अख्तियार करती है तो उसे जनसंचार की संज्ञा से विभूषित किया जाता है।

समकालीन सूचना प्रौद्योगिकी समाज में विविध संचार माध्यमों के द्वारा को जन–जन तक सम्प्रेषित किया जा रहा है। जिस प्रकार किसी जैविकीय प्राणी के सर्वांगीण विकास हेतु सजग अभिभावक, शिक्षक, निर्देशक, मित्र, आलोचक इत्यादि की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार किसी भी समाज को गतिशील करके उसके सर्वांगीण विकास हेतु जनसंचार पूर्ण करती है। सम्प्रति किसी ऐसे समाज के विकास की परिकल्पना करना सम्भव नहीं है जो जनसंचार की आवश्यकता अनुभव न करता हो। अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं की सूचना आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक विषयों की जानकारी, प्र.ति के खतरों से पूर्व परिचय आदि विभिन्न ऐसे विषय हैं जो किसी भी समाज के विकास के लिए आवश्यक हैं।

जनसंचार अपने विभिन्न माध्यमों, संस्थाओं, जन–सम्पर्क से लेकर आधुनिक युग दूरदर्शन, कम्प्यूटर इत्यादि से समाज के विकास, शिक्षा के प्रचार–प्रसार से लेकर विश्व के राजनैतिक–आर्थिक गतिविधियों से चन्द मनटों में पूरे विश्व को अवगत कराता है। पत्र–पत्रिकाओं में लेख, कहानी, प्रश्नोत्तरी, देश–विदेश की सूचनाएँ, नवीन तथा प्राचीन उपलब्धियाँ, धरोहरों की जानकारी आदि स्तम्भ छपते हैं। वहीं दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं कृत्रिम उपग्रहों के माध्यम से निरन्तर सूचनाओं के साथ–साथ शैक्षणिक कार्यक्रमों का भी प्रसारण होता है। दूरदर्शन एवं आकाशवाणी निरन्तर विभिन्न वर्गों के लिए अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करता है। 'स्काई रेडियो' प्रणाली से भी ऐसे कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है। इंटरनेट के माध्यम से विश्व के अनेक पुस्तकालयों के दुर्लभ ग्रन्थों के जारी कर दिये जाने के बाद शोधपरक कार्यों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। कम्प्यूटर के माध्यम से पुस्तकों के मुद्रण इत्यादि अति सरल हो जाने के कारण शैक्षणिक क्षेत्र में सकारात्मक पहल हुई है। शैक्षणिक जगत के साथ–साथ नयी–नयी चिकित्सा–पद्धतियों एवं विज्ञान जगत के शोधों का वैश्वीकरण सम्भव हो पाया है, जिसे मानव–जीनोम जैसे अति जटिल शोध भी सम्भव हो पाया है।

जनसंचार के माध्यम समाज में रचनात्मक कार्य करने का वातावरण निर्मित करने में भी सहायक सिद्ध हुआ है। इसके द्वारा किसी विशेष मुद्दे पर जनमत एकत्र करके समाज को उचित मार्ग निर्देशन करने का मार्ग प्रशस्त किया है। जनसंचार सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, समसामयिक मुद्दों पर बहस, सेमिनार, साक्षात्कार इत्यादि के द्वारा जनमत बनाकर समाज को संगठित करने में अहम भूमिका निभाता है। जनसंचार के माध्यम से गम्भीर से गम्भीर विषयों पर संवाद स्थापित कर सहमति बनाने का प्रयत्न करता है। नसबन्दी, परिवार नियोजन, पोलियो–उन्मूलन इत्यादि कार्यक्रमों को सफल बनाने में जनसंचार ने अपनी महत्ता को साबित कर दिया है। इसी प्रकार विधवा–विवाह, उचित

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

आयु में विवाह, वृद्ध–जनों की समस्या इत्यादि पर भी अनेक कार्यक्रम प्रसारित कर समाज में सामंजस्य स्थापित करने में जनसंचार की भूमिका सराहनीय रही है।

जनसंचार ने सामाजिक व्यवस्था को सु.ढ़ बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। अगर जनसंचार को सामाजिक नियंत्रण का साधन कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। जनसंचार द्वारा सामाजिक मूल्यों के प्रचार–प्रसार का उत्तरदायित्व का निर्वाह करके सामाजिक सम्बन्धों में सु. ढ़ता लायी जाती है। दूरदर्शन, आकाशवाणी, पत्र–पत्रिका आदि जनसंचार माध्यम अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के राष्ट्र पर पड़ने वाले प्रभाव से समाज को अवगत कराता है तथा जनता में सही निर्णय करने की चेतना को जागृत करता है। जनसंचार जनता को उचित कदम उठाने का अवसर भी देता है।

जनसंचार सांस्.तिक विकास एवं उसके संरक्षण कर समकालीन समाज को सुव्यवस्थित करने में भी मदद प्रदान करता है। जनसंचार माध्यमों के कारण ही धर्म के विभिन्न स्वरूप, पर्व, मेले, त्योहार, खान–पान इत्यादि में एकरूपता आयी है। मधुबनी पेंटिंग, कांगड़ा के चित्रकला इत्यादि का अन्तर्राष्ट्रीयकरण हुआ है। यात्रियों के द्वारा यात्रा–वृत्तान्त वर्णन से पूरे विश्व की जानकारी प्राप्त होती है। संचार माध्यमों ने भारतीय संस्.ति के संरक्षण एवं सम्वर्द्धन हेतु समय–समय पर आधुनिक तत्वों को समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर सांस्.तिक परिवर्तन लाकर उसमें समकालीनता के पुट प्रदान करते हैं। सरकार, स्वैच्छिक संगठन के साथ–साथ जनसंचार के प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सिनेमा इत्यादि भी सांस्.तिक विकास एवं संरक्षण को आध ुनिक तरीके से पेश कर जन–सामान्य को इसके प्रति जागरूक कर इसे जीवन्त बनाये रखता है। 'भारत उत्सव', 'अपना उत्सव', 'युवा महोत्सव' इत्यादि इसके उदाहरण हैं। तात्पर्य यह है कि जनसंचार समकालीन समाज के सांस्. तिक निर्माण एवं पुरानी संस्.ति के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

जनसंचार ने मनुष्य की मानसिक क्षमता को विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। संचार परस्पर आदान–प्रदान की एक क्रिया है। नित्य प्रति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर घटित होने वाली घटनाओं तथा उनके प्रभाव, नित्य होने वाली नवीन आविष्कार, सुधार आदि से सम्बन्धित जानकारी प्रसारित करके जनसंचार साधनों ने मनुष्य की बौद्धिक क्षमता को विकसित किया है।

यह भी स्मरणीय है कि वर्तमान में लगभग प्रत्येक कार्यक्रम में स्मृति एवं मानसिक क्षमता जाँचने के लिए इनामी प्रतियोगिताओं का आकर्षण उपस्थित किया जा रहा है। कहा भी जाता है कि जनसंचार माध्यमों से समाज का ब्रेनवाश किया जाता है। नयी चेतना जगाने के लिए विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन अपने स्तर से अपने कार्यकर्ताओं की सहायता से जनसम्पर्क करके यह कार्य करते हैं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जन–सम्पर्क, संगोष्ठी, नुक्कड़ नाटक, जागरूकता गीत आदि विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया जाता है। दूरदर्शन, आकाशवाणी, पत्र–पत्रिकाओं द्वारा भी अपने इस दायित्व का पालन सजगता से किया जा रहा है। हिन्दू–मुस्लिम एकता, अन्तर्जातीय विवाह, वर्ग–वैषम्य, आतंकवाद आदि ऐसे विषय हैं, जिन्हें केन्द्र में रखकर अनेक धारावाहिक एवं फिल्मों का निर्माण हुआ है। सम्प्रति जहाँ एक ओर जनसंचार के आधुनिक माध्यम–विशेषतः दूरदर्शन, फिल्म तथा पत्रकारिता ने समाज–निर्माण में सकारात्मक भूमिका निर्वाह की है, वहीं इनकी कार्य–प्रणाली पर प्रश्न–चिह्न भी लगे हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि इन माध्यमों से समाज को जो अपेक्षाएँ थीं, उन पर संसाधन पूर्णतः खरे नहीं उतरे। परिणामतः यह साधन अपनी निष्पक्षता के लिए संदिग्ध हो गये।

दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम में बढ़ती पाश्चात्य सभ्यता विडियो रिकॉर्डर पर मनचाहे प्रदर्शन तथा विदेशी चौनलों के आगमन में तथा फिल्म में बढ़ती अश्लीलता अथवा खुलेपन का प्र.ति इन माध्यमों से सांस्.तिक, सामाजिक विघटन एवं पतने के लिए उत्तरदायी माना जा रहा है। इन माध्यमों द्वारा खुलेपन तथा विकास की आड़ लेकर जो ग्लैमर समाज में परोसा गया है, उससे सामाजिक जन की आँखें चौंधिया गयी हैं। परिणामतः येन–केन प्रकारेण बड़े–बड़े बंगले, नयी–नयी कारें, वस्त्राभूषण, सैर–सपाटे के अधुनातन तरीके तथा सुरा–सुन्दरी के सान्निध्य को प्राप्त करने की होड़ समाज में लग गयी है, जिससे सामाजिक विघटन उपस्थित हुआ है। 'फास्ट फूड संस्.ति' भारतीय व्यंजनों के स्वाद फीका कर रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हरपालानी, वी०डी० : प्रसार शिक्षा
2. स्वाधिगम सामग्री : कोटा खुला विश्वविद्यालय एवं नालन्दा खुला विश्वविद्यालय
3. शर्मा, कमलेश वर्मा, माया : गृह विज्ञान प्रसार शिक्षा
4. दैनिक जागरण : 6 दिसम्बर, 2006।

*****